इकाई 1 : समूह की अवधारणा

*प्रो. रोज़ नैम्बियाकिम

रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 परिचय

1.2 समूह की परिभाषा व अर्थ

1.3 समूह की विशेषताएँ

1.4 समूह के प्रकार

1.5 समूह के लाभ व हानियाँ

1.6 सारांश

1.7 उपयोगी पुस्तकें

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप समझने में सक्षम होंगे :

- समूह की परिभाषा और अर्थ का समझना;
- समूह की विशेषताओं की व्याख्या करना;

* प्रो. रोज़ नेम्बियाकिम, समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली।

- समूह के प्रकारों को समझना : प्राथमिक और द्वितीयक, नियोजित और आपातकालीन; और

- समूह के लाभों तथा हानियों को रेखांकित करना।

1.1 परिचय

समाज वैज्ञानिकों ने पिछली शताब्दी में ही समूहों की विभिन्न विशेषताओं को सूचीबद्ध किया है तथा सिद्धांतों को विकसित किया है यद्यपि अज्ञात समय से ही समूह की अवधारणा जैसे परिवार तथा जनजातियाँ अस्तित्व में रही है। समूह का अध्ययन मुख्य रूप से सामाजिक मनोविज्ञान तथा समाज विज्ञान के अर्न्तगत किया जाता है जहाँ वैज्ञानिकों ने मानव व्यवहार, व्यक्तिगत पहचान पर समूह के प्रभावों तथा समूहों में सम्मिलित होने के उद्देश्यों को अन्वेषित किया। इसका अनुसरण समाज कार्य तथा सामाजिक क्रिया में समस्याएँ सुलझाने में व्यक्तियों की सहायता करने तथा सर्वांग रूप में सामाजिक परिवर्तन लाने में समूहों के महत्व के अनुसरण द्वारा किया गया।

1.2 समूह की परिभाषा और महत्व

हम जन्म के समय से ही किसी एक अथवा एक से अधिक समूह से सम्बद्ध हो जाते हैं, उदाहरण के लिए, परिवार, लिंग और सामाजिक स्थिति। हम ऐच्छिक अथवा अनैच्छिक रूप से, अथवा दोनों रूपों में समूहों के एक भाग बन जाते हैं। परम्परागत रूप से, प्रत्येक व्यक्ति समूहों के अनेक भिन्न प्रकारों से सम्बन्धित होता है। उदाहरण के लिए, आप एक कॉलेज समूह, खेल टीम, मित्र समूह, चर्च समूह, कार्यस्थल अथवा किसी अन्य समूह के एक सदस्य हो सकते हैं। वैकल्पिक रूप से, हम अपनी सामाजिक–आर्थिक स्थिति जैसे जाति अथवा जनजाति, आय अथवा शिक्षा के कारण असावधानीवश समूहों के साथ सम्बद्ध हो सकते हैं। प्रत्येक

व्यक्ति एक समूह का भाग होने का अनुभव करता है, तथा यह समूह से सम्बद्धता ही है जो अनेक अन्य व्यक्तियों के बीच हमारी पहचान, अनुभवों, अवधारणाओं तथा मूल्यों को आकार देती है। समूह हमारे सामाजिक जीवन का एक अनिवार्य भाग है। समूह की एक एकल, संश्लिष्ट परिभाषा प्रदान करना कठिन हो सकता है यद्यपि समाज कार्य अभ्यास में असंख्य अनुभवजन्य ज्ञान विद्यमान होता है। इस इकाई में, हम कुछ मुख्य व्याख्याओं का अन्वेषण करेंगे जिनका समाज कार्य अभ्यास में अक्सर प्रयोग किया जाता है।

सभी समाजों में समूह पाये जाते हैं। आइए, सर्वप्रथम हम समूहों को एक सामाजिक इकाई के रूप में समझते हैं। ''एक सामाजिक समूह दो अथवा दो से अधिक व्यक्तियों का एक संग्रह होता है जिनकी समान सामाजिक पहचान होती है– वे समान प्रकार से स्वयं की पहचान करते हैं तथा इसकी परिभाषा रखते हैं कि वे कौन हैं, वे कौन सी विशेषताएँ रखते हैं, तथा अन्य विशिष्ट बाह्य समूहों से वे कैसे सम्बन्धित तथा भिन्न हैं'' (ताजफेल, एच. एडि. 2010)[1]।

सामाजिक समूह सर्वत्र पाये जाते हैं। समूह दो अथवा दो से अधिक व्यक्तियों से बनाए जा सकते हैं जो एक–दूसरे से सम्बन्धित होते हैं तथा जिनमें अर्न्तव्यैक्तिक सम्बन्ध होते हैं। समूह व्यक्तियों की बड़ी संख्या का संग्रह हो सकते हैं, उदाहरण के लिए, समान धर्म से सम्बन्धित व्यक्तियों का एक समूह, अथवा लघुत्तर इकाई, जैसे ऐसे विद्यार्थी जो मासिक विद्यालय बुलेटिन तैयार करने के लिए उत्तरदायी हैं। व्यक्ति सामान्यतया एक समान उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक समूह के सदस्य बन जाते हैं, तथा उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए अर्न्तनिर्भरता तथा संचार को एक उपयोगी साधन के रूप में मानते हैं।[2]

[1] तेजफल, एच.एडि. 2010, सोशल आइडेंटिटी एंड इन्टरग्रुप रिलेशंस, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस।
[2] लेविन, कुर्त (1951) फील्ड थ्योरी इन सोशल साइन्स, सलेक्टिड थ्योरीटीकल पेपर्स।

इसलिए, एक समूह व्यक्तियों का एक योग नहीं होता जो एक–दूसरे से स्वतंत्र हैं इसके स्थान पर यह एक विशेषीकृत सामाजिक इकाई है (बेल्स और स्मिथ)। एक योग केवल व्यक्तियों का एक समूह होता है जो एक स्थान पर संयोगवश स्वयं को पाते हैं, उदाहरण के लिए, एक एयरपोर्ट के गमन द्वार पर एक उड़ान के आने की प्रतीक्षा कर रहे व्यक्तियों का एक समूह। समाज कार्य अभ्यास में समूह कार्य को समझने तथा अपनाने हेतु समूह, इसके प्रकारों तथा भिन्न आयामों को समझना अनिवार्य आवश्यकता है।

यह जानना महत्वपूर्ण है कि यद्यपि सदस्य एक समूह में होने से अत्यधिक लाभान्वित हो सकते हैं, यह भी एक पक्ष हो सकता है कि सदस्यों पर इसके अवांछनीय प्रभाव पड़ें। इसी भाँति, समूह समाज पर प्रभाव डालने में एक सकारात्मक रूप से महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं अथवा सम्पूर्ण रूप में यह समाज के लिए भी समस्याएँ उत्पन्न कर सकते हैं। हम इसके बारे में बाद में विचार–विमर्श करेंगे।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी : अ) उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. सामाजिक समूह को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.3 समूह की विशेषताएँ

अब हम समझते हैं कि एक समय की एक लघु अवधि के लिए व्यक्तियों का प्रत्येक संग्रह, समूह नहीं माना जा सकता, उदाहरण के लिए, एक मूवी थियेटर में अथवा चिकित्सक से मिलने के लिए एक साथ प्रतीक्षा करते हुए व्यक्ति। इस प्रकार, समूह व्यक्तियों का एक अक्रमिक समूह नहीं है वरन् यह एक ऐसी इकाई है जिनका समान उद्देश्य होता है, समान रूप से स्वीकृत कार्य करते हैं, अर्न्त–निर्भर होते हैं तथा एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं।[3] समूह नियोजित तथा मंशापूर्वक निर्मित होते हैं।

समूह की कतिपय मुख्य विशेषताएँ होती हैं जिन्हें जानना आपके लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आपकी यह पहचान करने में सहायता करेगा कि व्यक्तियों का एक संग्रह वास्तव में समूह है, अथवा नहीं। समूह की उन विशेषताओं के अतिरिक्त, जो यहाँ बतायी गयी है, कतिपय अन्य विशेषताएँ हो सकती हैं, यह इकाई समूह की गतिकी और उनमें निहित प्रक्रियाओं की एक बर्हिगम दृष्टि प्रदान करेगी।

- **समान उद्देश्य :** समूह सामान्य रूप से एक समान उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अनिवार्यतः बनाए जाते हैं। समूह दो अथवा दो से अधिक लोगों से बनते हैं जो एक समान उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक साथ आते हैं,

[3] Hare, ए.पी., 1976, हैंडबुक ऑफ स्मॉल ग्रुप रिसर्च

जिसे एकल तौर पर प्राप्त करना कठिन माना जाता है, थीडोर एम. मिल्स (1967:2) सदस्य विश्वास करते हैं कि एक सामूहिक इच्छा उन्हें अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायता करेगी तथा इसीलिए, वे एक–दूसरे से सहयोग करते हैं, कुर्तलेविन (1948), जारलाथ एफ बेन्सन, (बास, कारटैल)

- **अर्न्तव्यैक्तिक संचार :** एक समूह के सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्गीकरण में से एक है कि एक समूह के सदस्य नियमित तौर पर समय–समय पर एक दूसरे से संप्रेषण करते है। समूहों में व्यक्ति अर्थवान आदान–प्रदान करने के लिए प्रत्यक्ष अर्न्तक्रिया करते हैं। यह अर्न्तक्रिया के माध्यम से ही होता है कि सदस्य अपने सम्बन्ध बनाते हैं तथा एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। (जारलाथ एफ. बेन्सन, जॉर्ज होमन्स (1950:1) फॉरसिथ मुख्य रूप से दो प्रकार की अर्न्तक्रियाएँ करने वाले समूहों को वर्गीकृत करते हैं। 'कार्य अर्न्तक्रिया' जहाँ संचार मुख्यतः समूह गतिविधियों की योजना बनाने तथा क्रियान्वयन और सामूहिक परिणाम की सफलता पर केन्द्रित होता है। जबकि 'सम्बन्ध अर्न्तक्रिया' सामाजिक सम्बन्धों को बनाने तथा बनाए रखने पर केन्द्रित होता है।

- **समान पहचान :** एक समूह में सदस्य एक–दूसरे से सम्बन्धित होते हैं क्योंकि वे समान सामाजिक समूहों से सम्बन्धित हो सकते हैं, तथा उन रीति–रिवाजों, दृष्टिकोणों, मूल्यों तथा विश्वासों को प्रोत्साहित करने तथा बनाए रखने के लिए समूह की सदस्यता लेते हैं जो उनकी पहचान कराते हैं, जॉन सी टर्नर (1987:1–2) कम से कम दो अथवा दो अथवा दो से अधिक सदस्य यह पहचान करेंगे कि वे एक समूह से सम्बन्ध रखते हैं तथा बाहरी व्यक्ति उनकी एक सामाजिक इकाई के रूप में पहचान करेंगे। कोहेन और बेली (1997) टीम की एक परिभाषा देते हैं जो व्यक्तियों के एक समूह का प्रतिनिधित्व करती है, जो एक सामाजिक सत्ता के रूप में

समझे जाते हैं एवं स्वयं को समझते हैं, एक समान लक्ष्य अथवा लक्ष्यों के लिए एक साथ कार्य करते हैं, तथा जो सम्बन्धों को बनाते हैं तथा संगठनात्मक सीमाओं के परे आदान–प्रदान करते हैं।

- **सामाजिक अर्न्तनिर्भरता :** एक समूह में सदस्य अर्न्तनिर्भर होते हैं। एक समूह में प्रत्येक व्यक्ति का प्रदर्शन न केवल उसकी अपनी गतिविधियों पर, वरन् काफी हद तक समूह के अन्य सदस्यों के द्वारा भी प्रभावित होता है। यह समूह की मुख्य विशेषताओं में से एक है, रॉबर्ट एस. बेरोन एट एल (2003:139)

- **संरचना :** एक समूह संरचना से तात्पर्य है कि सदस्यों के बीच भूमिका का स्पष्ट निर्धारण हुआ है, उदाहरण के लिए एक समूह का नेता, जो एक ऐसा व्यक्ति होता है जो सदस्यों में सूचनाएँ वितरित करता है। एक संरचित समूह की एक आचार–संहिता होती है जो उन्हें निर्देशित करती है। एक समूह के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि उसके कुछ स्वीकृत विधान हो ताकि सदस्य एक उद्देश्यपूर्ण और व्यवस्थित तरीके से संचालित कर सके, फोरसिथ (2006:11)

बोध प्रश्न II

टिप्पणी : अ) उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. समूह की विशेषताओं को सूचीबद्ध कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.4 समूह के प्रकार

समाजशास्त्रियों ने सामाजिक समूहों के अपने अध्ययन के आधार पर समूहों के अनेक वर्गीकरण किए हैं। ये प्रयास सामाजिक समूहों की अर्न्तप्रवृत्तियों, संरचना और उद्देश्य को उदघाटित करने की मंशा से किए गए हैं। समाज कार्य अभ्यासकर्त्ता और अनुसंधानकर्त्ता ने समूहों के विभिन्न प्रकारों की पहचान की है तथा/अथवा वे एक अथवा अन्य प्रकार के समूहों के निर्माण की सुविधाएँ प्रदान करने में एक केन्द्रीय भूमिका निभा सकते हैं। कुछ जानने योग्य वर्गीकरण निम्नलिखित हैः

व्यक्ति एक खुले समूह में शामिल होने अथवा उसे छोड़ने के लिए स्वतंत्र होते हैं जबकि समूह का अस्तित्व बना रहता है। इसमें समूह सदस्यों की कोई विशेषीकृत संख्या नहीं होती तथा सदस्यता सभी के लिए खुली होती है, उदाहरण के लिए, सामाजिक नेटवर्क प्लेटफार्म जैसे प्रसिद्ध सार्वजनिक व्यक्तियों के लिए एक फेसबुक समूह। जबकि बन्द समूह की सदस्यता बर्हिवेशी, जोड़ने वाली तथा एक निश्चित समयावधि के लिए होती है जैसे कि समूह परामर्श में संरचित सत्र होते हैं। एक बन्द समूह में परंपरागत रूप से, सदस्यों की एक निश्चित संख्या तथा

एक सदस्यता श्रेणी होती है जो सभी प्रकार के व्यक्तियों के प्रवेश को प्रतिबंधित करती है।

कूले सामाजिक समूहों को प्राथमिक तथा द्वितीयक समूहों में विभेदीकृत करते हैं। एक प्राथमिक समूह, व्यक्तियों का एक संग्रह होता है जो एक–दूसरे से आमने–सामने अर्न्तक्रिया करते हैं तथा उनमें स्थायी सम्बन्ध होते हैं। यह परिचय, घनिष्ठ सम्बन्ध तथा पारस्परिक आदान–प्रदान एक–दूसरे को अपने विचारों तथा मूल्यों से प्रभावित करने की अधिक सुविधा प्रदान करता है। प्राथमिक समूह आकार में अपेक्षाकृत छोटे होते हैं (कूले) तथा सरोकार एवं सहयोग बाँटने की सुविधा देते हैं, उदाहरण के लिए, एक बन्द मित्रता समूह, एक एकल परिवार।

द्वितीयक समूह में सदस्य मुश्किल से ही आमने–सामने अर्न्तक्रिया करते हैं, अथवा बिलकुल भी संलग्न नहीं होने पाते। वे औपचारिक रूप से संगठित होते हैं, उनके आदान–प्रदान अनिवार्य रूप से स्पष्ट होते हैं तथा सम्बन्ध एक लघु अवधि के लिए विद्यमान रहता है। इस प्रकार के समूह समान उद्देश्यों के आधार पर स्थापित किए जाते हैं, सदस्यों की निर्धारित भूमिकाएँ तथा उत्तरदायित्व होते हैं, इसलिए ऐसे समूह व्यक्तिगत सम्बन्धों पर आधारित होने के स्थान पर सक्रियतापूर्वक उन्मुख होते हैं परन्तु सम्बन्ध केवल कार्य अवधि तक सीमित हो सकता है। द्वितीयक समूह आकार में बड़े होते हैं, उदाहरण के लिए, एक संगठन के कर्मचारी, कॉलेज विद्यार्थी एक कक्षा असाइनमेंट पर एक साथ कार्य करते हैं।

प्राकृतिक समूह स्वतः स्फूर्त तरीके से बनाये जाते हैं जब ऐसे व्यक्ति जो परिस्थितिवश एकत्र होते हैं, अर्न्तक्रिया करना प्रारंभ कर देते हैं। यह अर्न्तक्रिया प्रक्रिया धीरे–धीरे पारस्परिक रूचि अथवा आवश्यकता पर आधारित एक जमाव की ओर प्रवृत्त होती है। (व्हाइट, 1993) उदाहरण के लिए, क्लब, गैंग, एक म्यूजिकल कंसर्ट में दर्शक, कॉलेज में प्रवेश लेने हेतु पंक्तिबद्ध विद्यार्थी। आकस्मिक समूह

शब्द, समूहों के इसी प्रकार का वर्णन करने के लिए भी प्रयोग किया जाता है। (कार्टराइट तथा जेन्डर, 1968)

नियोजित समूह, जानबूझकर समूह के व्यक्तियों अथवा बाहरी व्यक्ति अथवा संगठनों द्वारा बनाए जाते हैं, ऐरो एट.एल (2000). नियोजित समूह औपचारिक, संगठित, सामान्यता पूर्व निर्धारित सदस्यता वर्गीकरण वाले, तथा निश्चित मानकों नियमों तथा विधानों के अनुसार कार्य करने वाले होते हैं। नियोजित समूहों के सामान्यतया पूरे करने के लिए समान कार्य होते हैं तथा एक लक्ष्य अथवा उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए केन्द्रित होते हैं। थैरेपी समूह, स्वयं–सहायता समूह, एच आई वी पॉजीटिव व्यक्तियों का नेटवर्क, आयोग तथा मानव अधिकार समूह, नियोजित समूहों के उदाहरण हैं।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी : अ) उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग कीजिए।

आ) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. प्राकृतिक तथा नियोजित समूहों को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

समूह विकास के सिद्धान्त

समूह संगठित, गतिशील तथा समय के साथ परिवर्तनशील होने वाले होते हैं। सार रूप में, समूह विकसित होते है, पनपते हैं तथा समाप्त हो जाते हैं। फोरसिथ (2009, पृष्ठ 19) समूह विकास को ''उन्नति तथा परिवर्तन के पैटर्न जो समूह के जीवन–चक्र में उभरते हैं'' के रूप में परिभाषित करता है। जैसा कि पहले बताया गया है, समूह हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों में एक नियमित परिघटना है। वे समाज कार्य अभ्यास सहित पेशेवर क्षेत्र में उपयोग की जाने वाली एक सामान्य पद्धति है।

समूह विकास प्रक्रियाओं से सम्बन्धित विभिन्न सिद्धान्त हैं। दो सिद्धान्त जिनका समूह विकास को व्याख्यापित करने के लिए व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है– क्रमिक सोपान प्रतिदर्श तथा चक्रीय प्रतिदर्श है।

क्रमिक सोपान प्रतिदर्श सिद्धांतों में सर्वाधिक उदधृत किया जाने वाला सिद्धान्त, समूह–विकास के चार चरण हैं– निर्माण करना, तूफान, विधानीकरण और प्रदर्शन[4] यह सिद्धान्त बताता है कि समूह पिछले सोपान से निर्मित होते हुए क्रमिकतापूर्वक प्रगति करते हैं। ये सोपान उस समय से प्रारंभ हो जाते हैं, जब संभावित सदस्य अर्न्तक्रिया करना प्रारंभ कर देते हैं तथा जब तक रहते हैं, जब तक कि समूह समाप्त नहीं हो जाता। एक पाँचवा सोपान जिसे बाद में जोड़ा गया, स्थगित करना है। ये सोपान समूहों पर भिन्न सन्दर्भों में प्रयुक्त किए जा सकते हैं– व्यवसाय, स्थान, उद्देश्य, जनांकिकी तथा अन्य।

[4] टकमैन, बी.डब्लू (1965). डवलपमैन्टल सिक्वेन्स इन स्मॉल ग्रुप्स, सायक्लोजीकल बुलेटिन, 63 (6) : 384–399.

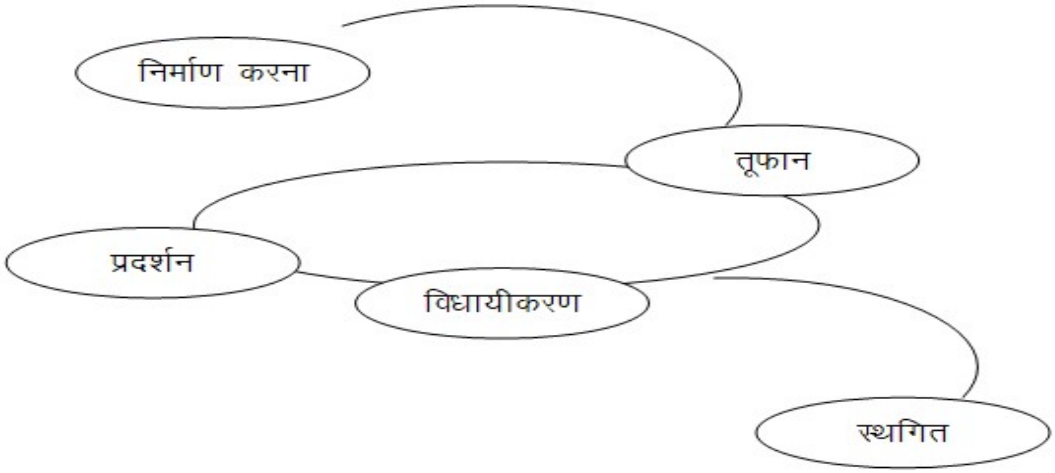

समूह विकास के सोपान

निर्माण सोपान	सदस्य सौहार्द्र स्थापित करते हैं, एक दूसरे से परिचित होते हैं तथा व्यक्तियों तथा समूह की संभावित भूमिकाओं पर विचार–विमर्श करते हैं।
तूफान सोपान	समूह क्रियाएँ प्रारंभ होती हैं, सदस्य समूह कार्यों पर संघर्षों का अनुभव करते हैं तथा व्यक्तित्वों में भिन्नताओं का सामना करते हैं।
विधायी सोपान	सदस्य उन मूल्यों की पहचान करते हैं जो उन्हें एक साथ जोड़ते हैं। उनमें अब अधिक समझ तथा एकता होती है।
प्रदर्शन सोपान	सदस्य समूह उद्देश्य के विषय में अधिक स्पष्ट होते हैं, वे प्रेरित होते हैं, अपनी इच्छा में एकरूप होते हैं तथा

	सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सहयोगपूर्वक कार्य करते हैं।
स्थगन सोपान	समूह उद्देश्य को प्राप्त करने के बाद सदस्य अलग हो जाते हैं।

समूह विकास एक रेखीय नहीं होता, जैसा कि टकमैन ने बताया है, इसके स्थान पर यह चक्रीय होता है। समूह क्रमिक रूप से अगले सोपान पर आए बिना, सोपानों के अन्दर पीछे जा सकते हैं अथवा आगे आ सकते हैं। समूह योजनानुसार विकसित नहीं हो सकते, बेल्स और कोहेन (1979)[5]। समूह चक्रीय होने के साथ–साथ अग्रगामी होने की विशेषताओं से युक्त हो सकते हैं। यह एक एकल सोपान में विधायिनी और प्रदर्शन कर सकते हैं। (मैकेंजी 1997)

समूह विकास काफी हद तक नेतृत्व तथा समूह गतिविधियों में सदस्यों की संलग्नता के स्तर पर निर्भर करता है। एक समूह के साथ कार्य करना अथवा एक समूह का एक सदस्य होना हमेशा सरल नहीं होता। समूह विकास प्रक्रियाओं से परिचित होने, आपको एक रोडमैप की योजना बनाने, अन्तःक्षेप बिन्दुओं की पहचान करने तथा समूह उद्देश्यों को प्राप्त करने में योगदान देने में सक्षम बना सकता है।[6]

1.5 समूह के लाभ और हानि

समूहों के लाभ और हानियाँ

[5] बेल्स, आर.एफ & कोहेन, एस.पी. (1979), सिमलोग : ए सिस्टम फॉर द मल्टीपल लेवल आब्जरवेशन ऑफ ग्रुप्स, न्यूयॉर्क : मैक्मीलन पब्लिशिंग।

[6] (https:us.sagepub.com/sites/default/Files/upm-binaries/64983_chapter-4.pdf)

अब तक हमने रेखांकित किया है कि एक समूह क्या होता है और इसकी विशेषताएँ क्या होती है। समूह के स्पष्टतया लाभ और हानि होते हैं। कुछ अक्सर घटित होने वाले अनुभव अग्रांकित है, यद्यपि आप उनके अतिरिक्त भी इनमें कुछ और जोड़ने में सक्षम हो सकते हैं।

लाभ :

- समूह व्यक्तियों को समान हितों तथा लक्ष्यों पर एक साथ कार्य करने के लिए प्लेटफॉर्म प्रदान करते हैं, जिससे उत्पादकता और प्रदर्शन/कार्य निष्पादन में वृद्धि होती है। इसलिए विविध स्थापनों जैसे–कार्यस्थल, शिक्षा, समुदायों इत्यादि में वांछित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए टीमवर्क एक निरन्तर मूल्यवान व्यवस्था है।

- यह व्यक्तियों को एकजुटता निर्मित करने, सूचना तथा ज्ञान बाँटने तथा मूल्यों को प्रोत्साहित करने का अवसर प्रदान करता है। परिवार, धार्मिक समूह, मित्रता समूह और स्वयंसेवी समूह मनोवृत्तियों, मूल्यों तथा विधानों को आकार देने में उल्लेखनीय भूमिका निभाते हैं।

- एक समूह में रहकर एक व्यक्ति अर्न्तव्यैक्तिक दक्षताओं का विकास कर सकता है, नेतृत्व गुणों का निर्माण कर सकता है, आत्म–जागरूकता में वृद्धि कर सकता है तथा आत्मनिर्भरता के महत्व को अपना सकता है, जो समाजीकरण के महत्वपूर्ण तत्व हैं तथा सम्पूर्ण रूप में समाज के लिए लाभकारी है।

- समूह सहयोग प्रदान करने और सामूहिक के साथ–साथ व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान करने में भी महत्वपूर्ण रूप में भूमिका निभा सकते हैं। हम आमतौर पर जब अपनी समस्याओं के बारे में मित्रों, परिवारों और

सहकर्मियों के साथ विचार–विमर्श करते हैं, एक दृष्टिकोण तथा संभावित समाधान प्राप्त करते हैं।

- कतिपय मामलों में, एकल व्यक्तियों के साथ कार्य करने के स्थान पर समूहों के साथ कार्य करना अपेक्षाकृत न्यूनतम लागत वाला तथा समय बचाने वाला सिद्ध हो सकता है। ये तर्कशास्त्रीय तत्त्व समाज अनुसंधताओं हेतु सहायक होते हैं, जब वे समूह तकनीकों पर ध्यान केन्द्रित करने के माध्यम से जानकारी एकत्र करते हैं।

हानियाँ

- यद्यपि समूह व्यक्तियों को एक समान उद्देश्य रखने का अवसर प्रदान करते हैं, यह अर्न्तव्यैक्तिक द्वन्द्वों को भी बढ़ावा दे सकते हैं। एक टीम में कार्य करते समय मतों की भिन्नता और सदस्यों के मध्य वैमनस्य, एक नियमित परिघटना है।

- एक समूह में समान भागीदारी सुनिश्चित करना कठिन हो सकता है, कुछ सदस्य कतिपय क्षेत्रों में प्रभुत्व का प्रदर्शन कर सकते हैं, जैसे अन्य सदस्यों को हाशिये पर धकेलने वाले निर्णय करना।

- एक समूह में गोपनीयता बनाए रखना एक बड़ा मुद्दा है। इससे जुड़ी एक जटिलता है कि जब समान समुदाय अथवा सामाजिक उपक्षेत्र से सम्बन्धित समूह के साथ काम किया जाता है, सदस्य गलत समझे जाने के डर से जानकारी बाँटने से बच सकते हैं, यदि उनकी समस्याएँ और मत, समाज के सर्वस्वीकृत नियमों तथा मूल्यों के विरूद्ध है।

- समूह की प्राथमिकता व्यक्तिगत आवश्यकताओं और सरोकार पर हावी हो सकती है तथा इस प्रकार उन्हें अपने उद्देश्य को पूरा करने से रोकती है।

- समूह, व्यक्तियों को उन विचारों, दृष्टिकोणों तथा व्यवहारों को अपनाने हेतु एक प्रभावशाली भूमिका निभा सकते हैं, जिनसे व्यक्तियों तथा सम्पूर्ण समाज का भला नहीं होता। अध्ययन दर्शाते हैं कि साथी समूह का दबाव, मादकद्रव्यों जैसे ड्रग्स, धूम्रपान और शराब की शुरूआत करने में योगदानकारी तत्त्वों में से एक है।

हमें इन तत्त्वों का आंकलन करने की आवश्यकता है ताकि समूहों को सभी सदस्यों को लाभ प्रदान करने के लिए रणनीतिक रूप से व्यवस्थित किया जा सके।

1.6 सारांश

इस इकाई में हमने समूहों के बारे में सीखा। समूह जो हमारे सामाजिक जीवन का एक आन्तरिक भाग होते हैं और दो अथवा दो से अधिक व्यक्तियों, जो एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं और अर्न्तव्यैक्तिक सम्बन्ध रखते हैं, से बने हो सकते हैं। इसी समय पर हमने यह भी सीखा कि यद्यपि एक समूह में रहने से सदस्यों को अनेक प्राप्त हो सकते हैं, इसका सदस्यों पर अवांछित प्रभाव भी हो सकता है। इसी भाँति, समूह समाज को प्रभावित करने में एक सकारात्मक रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं अथवा यह सम्पूर्ण समाज के लिए समस्याएँ उत्पन्न कर सकते हैं। यह इकाई समूह की मूल विशेषताओं पर भी दृष्टि डालती है जिन्हें जानना महत्वपूर्ण है, जो यह पहचान करने में सहायता करेंगी कि व्यक्तियों का एक संग्रह वास्तव में समूह है अथवा नहीं। समूह की वर्णित विशेषताओं के

अतिरिक्त भी अन्य विशेषताएँ हो सकती हैं, यद्यपि उनमें संलग्न गतिकी और प्रक्रियाओं का पर एक विहंगम दृष्टि डालने का प्रयास किया गया है।

यह इकाई समूह के प्रकारों का भी वर्णन करती है जिन्हें एक समाज कार्य शिक्षाविद, अभ्यासकर्त्ता तथा अनुसंधानकर्त्ता जान सकते हैं तथा वे एक अथवा दूसरे प्रकार के समूहों का निर्माण करने में एक केन्द्रीय भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं। इस इकाई में हमने यह भी सीखा कि समाज कार्य समूह विकास/निर्माण के अनेक सोपान होते हैं तथा प्रत्येक सोपान में अनेक चरण होते हैं जिनमें कार्यकर्त्ता तथा सदस्यों को सावधानीपूर्वक संलग्न होना पड़ता है। हमने समूह के लाभों तथा हानियों पर विचार–विमर्श करके इस इकाई को समाप्त किया है।

1.7 उपयोगी पुस्तकें

डेविस, बर्नाड (1975), द यूज ऑफ ग्रुप्स इन सोशल वर्क प्रैक्टिस राउटलेज – केगन पॉल, लन्दन।

हीप, केन (1985), द प्रैक्टिस ऑफ सोशल वर्क विद ग्रुप्स ए सिस्टेमेटिक एप्रोच, जार्ज एलियन एण्ड उनविन, लंदन।

कोनोपका, जिसेला (1958), सोशल ग्रुप वर्क : ए हैल्पिंग प्रोसेस, प्रैन्टिस हॉल इंक, एंगलवुड क्लिफ्स, न्यूजर्सी।

टोजलैन्ड, रोनाल्ड डब्लू एण्ड रिवाज, रॉबर्ट एफ, (1984), एन इंट्रोडक्शन टू ग्रुप वर्क, प्रैन्टिस मैक्मीलन पब्लिशिंग कम्पनी, न्यूयॉर्क।

ट्रैकर, एच.बी. (1955), सोशल ग्रुप वर्क : प्रिसीपल्स एण्ड प्रैक्टिस, एसोसिएशन प्रैस, न्यूयॉर्क।

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

- एक सामाजिक समूह, दो से अधिक व्यक्तियों का एक संग्रह होता है जिनकी समान सामाजिक पहचान होती है– वे एक समान रूप में स्वयं की पहचान करते हैं तथा इसकी एक समान परिभाषा रखते हैं कि वे कौन हैं, उनके क्या गुण हैं तथा वे एक दूसरे से कैसे सम्बन्धित हैं तथा समूह के बाहर कैसे भिन्न हैं।

बोध प्रश्न II

- समान उद्देश्य
- अर्न्तव्यैक्तिक संचार
- समान पहचान
- सामाजिक अर्न्तनिर्भरता
- संरचना

बोध प्रश्न III

- प्राकृतिक समूह–प्राकृतिक समूह स्वतः स्फूर्त रूप में बनाए जाते हैं जब ऐसे व्यक्ति जो एक स्थान पर परिस्थितिवश एकत्र हुए हैं, अर्न्तक्रिया करना प्रारंभ कर देते हैं।
- नियोजित समूह–नियोजित समूह, समूह के सदस्यों अथवा बाहरी व्यक्ति अथवा संगठनों के द्वारा जानबूझकर बनाए जाते हैं।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY